गोलमुरी. दो दिवसीय मैथिली संगोष्ठी का समापन, बोले प्रोफेसर मित्रेश्वर अग्निमित्र

लोकगाथा महाकाव्य, इसका अनुशीलन करें

स्टाफ रिपोर्टर ● जमशेदपुर

साहित्य अकादमी नयी दिल्ली और मिथिला सांस्कृतिक परिषद जमशेदपुर के संयुक्त तत्वावधान विद्यापति परिसर गोलमुरी में सोमवार को दो दिवसीय मैथिली संगोष्ठी संपन्न हुई. इसकी अध्यक्षता प्रो मित्रेश्वर अग्निमित्र ने की. उन्होंने लोकगाथाओं पर अपनी बात रखी. कहा कि लोकगाथाओं के नायक लोक देवों के रूप में प्रतिष्ठित हो गये. वे राम, कृष्ण तो नहीं हो सकते थे, सलहेश, लौरिक महाराज जरूर बन सकते थे. वे जमीन से पैदा हुए देव हैं. उन्होंने कहा कि लोकगाथा महाकाव्य है. इसलिए इसका अनुशीलन करना चाहिए.

गोलमुरी विद्यापति परिसर में सोमवार को मैथिली संगोष्ठी में उपस्थित लोग व संबोधित करते डॉ आरके दास. फोटो। प्रभात खबर

गाथाओं के हैं ऐतिहासिक प्रमाण : घाटशिला कॉलेज के प्राचार्य प्रो डॉ रवींद्र कुमार चौधरी ने प्रमाणित किया कि मिथिला में प्रचलित लोकगाथाएं मिथक नहीं हैं. उन्होंने गाथा में वर्णित नदी, पहाड़, मंदिर, गढ़ को मानचित्र पर प्रमाणित भी किया. कहा कि सभी गाथाओं के ऐतिहासिक प्रणाम हैं.

प्रस्तुत हुआ तीन आलेख : तिलकामांझी विश्वविद्यालय भागलपुर के मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ शिव प्रसाद यादव ने वर्तमान संदर्भ में लोक साहित्य के ऐतिहासिक उपादेयता पर अपना शोध आलेख सामने रखा. मधुबनी के महेंद्र नारायण राम ने सलहेश लोकगाथा की महत्ता बतायी. उन्होंने सलहेश की गाथा गायन कर सुनाया भी. दरभंगा के बचरू पासवान ने मैथिली साहित्य के विकास में लोकसाहित्य के महत्व पर शोध आलेख प्रस्तुत किया. मोतिहारी की डॉ चेतना झा ने मैथिली लोकगीत में नारी विमर्श पर आलेख सामने रखा. मधुबनी के अमित कुमार ठाकुर ने मैथिली लोकगीत का आधार संस्कार गीत पर शोध पत्र प्रस्तुत किया.

आगे भी होते रहेंगे कार्यक्रम : मैथिली परामर्श मंडल साहित्य अकादमी के संयोजक डॉ अशोक अविचल ने परिवेक्षीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया. साहित्य अकादमी के उप सचिव एन सुरेश बाबू ने कार्यक्रम का अनुभव साझा किया. कहा कि जमशेदपुर में आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे. परिषद के महासचिव सुजीत कुमार झा ने स्वागत भाषण, अध्यक्ष शिशिर कुमार झा ने धन्यवाद ज्ञापन किया.